ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
ISSN No. 2347-2944,RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218, SOCLREG. No. 561/2013-14
Vol-5, No.-II,PP-1-3, YEAR-Dec.2016

अवधी भाषा का स्वरूप और परिचय

❑ डॉ. जितेन्द्र सिंह

अवधी शब्द अवध में 'इ' प्रत्यय लगाने से बना है।[1] अवधी का अर्थ है– अवध के अन्तर्गत बोली जाने वाली अवधी–भाषा। हिन्दी के अन्य बोलियों (बघेली छत्तीसगढ़ी) में अवधी का सर्वोपरि स्थान है।[2] प्राप्त प्रमाणों के अनुसार अवधी की उत्पत्ति 10वीं शताब्दी के आस–पास हुई है। इसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में पर्याप्त प्रमाण अभी उपलब्ध नहीं हैं किन्तु जो कुछ तथ्य उपलब्ध हैं– उस पर विद्वान एक मत नहीं हैं। डॉ. अम्बाप्रसाद सुमन ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी और उसकी उप–भाषाओं का स्वरूप' में विचार व्यक्त करते हुए कहा है– ''वास्तव में साहित्यिक भाषा का विकास मूलतः किसी जनबोली से ही हुआ है। यह बात अवधी के लिए भी लागू होती है। कोसल प्रदेश के मध्य भारतीय आर्य–भाषा काल में जो भाशा बोली जाती थी उसी से अवधी नामक उपभाषा विकसित हुई।''[3] डॉ. गियर्सन ने अवधी को अर्द्ध मागधी से उत्पन्न सिद्ध किया है। डॉ. बाबूराम सक्सेना ने इसे सीधे पालि से उत्पन्न घोषित कर दिया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अवधी का उद्‌गम नागर अपभ्रंश से माना है उनका कथन है– ''अपभ्रंश या प्राकृत काल की काव्य–भाषा के उदाहरणों में आजकल की भिन्न–भिन्न बोलियों के मुख्य–मुख्य रूपों के बीज या अंकुर दिख गये हैं। इनमें से ब्रज और अवधी के भेदों पर कुछ विचार करना आवश्यक है क्योंकि हिन्दी–काव्य में इन्हीं दोनों का व्यवहार हुआ है।''[4] जैन अर्द्धमागधी का संधान पाँचवीं शताब्दी में हुआ। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि प्राचीन मागधी, बाद की अर्द्धमागधी से भिन्न थी और इसी प्राचीन अर्द्धमागधी से अवधी निष्पन्न हुई है।[5]

डॉ. भोलनाथ तिवारी ने अवधी की उत्पत्ति 'कोसली' से माना है। ब्रजभाषा के प्रख्यात कवि श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर' के अनुसार अवधी तो शौरसेनी से विकसित हुई है।[6] अवध प्रदेश या कोसल प्राप्त शौरसेनी के अन्तर्गत सम्मिलित है। डॉ. नामवर सिंह का यह मत इन सभी से भिन्न है ''दुःख है कि अवधी के किसी साहित्यिक अपभ्रंश का अब तक पता नहीं चल रहा है। अवध प्रान्त सूरसेन और मगध के बीच में होने से दोनों क्षेत्रों की भाशा सम्बन्धी विशेषताओं से युक्त समझा जाता है। वर्तमान भाषाओं के पूर्व सूरसेन में शौरसेनी–अपभ्रंश, मगध में मागधी–अपभ्रंश और इन दोनों के मध्य भाग में अर्द्ध–मागधी अपभ्रंश का प्रचलन रहा होगा। इसी अनुमान पर अर्द्धमागधी से अवधी के उद्‌गम का भी अनुमान किया जाता है। भाषा विवादों के अनुसार अवधी का उद्‌भव और विकास मागधी और शौरसेनी के मध्य स्थित उस क्षेत्रीय अपभ्रंश से हुआ है जिसकी मूलाधार मागधी थी, परन्तु शौरसेनी का

प्राचार्य, श्री विनायक पी.जी.कालेज, खजुरहट, फैजाबाद

ISSN No. 2347-2944,RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218, SOCLREG. No. 561/2013-14

उस पर व्यापक प्रभाव पड़ा था। यही कारण है कि प्राकृत वैयाकरणों ने उसे अर्द्धमागधी की संज्ञा दी है।''[7]

अवधी के प्राचीन रूपों के बीज हमें पहली सदी से भी पूर्व मिलने लगते हैं। पहली सदी के 200 वर्ष पूर्व एवं 200 वर्ष बाद के बीच के पिपरहवा, सोहगौरा, सारनाथ, रुम्मनदेई एवं खैरागढ़ अभिलेख इस दृष्टि से उल्लेख्य हैं। इसमें विशेष महत्त्व सोहगौरा का है। यद्यपि यह कहना होगा कि इनमें केवल अवधी प्रवृत्तियाँ हैं। साहित्यिक प्राकृतों के काल में ये बीज अंकुरित हुए और अपभ्रंश के परवर्ती काल में उनमें विकास हो गया। प्राकृत पैंगलम, कीर्तिलता आदि ग्रन्थों में जो भाषा संरचना दिखायी देती है उससे लगता है कि अवधी का स्वरूप काफी पहले का है। साहित्य में भाषा का प्रयोग समास में प्रयोग के बाद में होता है तथा कथित अवहट्ट में उपर्युक्त सभी रूपों को हेमचन्द्र नें उदयोन्मुख अवधी के रूप में स्वीकारा है।[8]

1400 ई. तक अवधी का निर्माण–काल या आदिकाल माना जा सकता है। उसके बाद 1700 ई. तक इसका मध्यकाल है। मध्यकालीन अवधी का रूप मुल्लादाउद के (लोंरकहा) या 'चन्दायन' (1370 ई0) लालदास के 'हरिचरित' 500 के बाद सूरजदास के राजकाल (15वीं सदी अन्तिम चरण), ईश्वर दास की (सत्यवती कथा 1501 ई.) तथा स्वर्णरोहिणी 'भरत मिलाप' (16वीं सदी प्रथम दषक), अंगदर्पण 16वीं सदी प्रथम दशक, कुतुबन की मषाावती (1503) तथा जायसी, आलम, तुलसीदास, उसमान, चतुर्भुजदास, लालदास, नारायण दास आदि की रचनाओं में सुरक्षित है। 300 वर्ष के इस बड़े काल में जैसा कि स्वाभाविक है, भाषा की एकरूपता नहीं है। कुतुबन तथा उनके पूर्व की भाषा के काल के पूर्व मध्यकाल तथा जायसी की रचनाओं में कहने को तो लगभग 30 वर्षों का अन्तर है किन्तु उनकी भाषा स्पष्टतः दो स्तरों की है। कुतुबन में पुरानी अवधी है तो जायसी में बाद की। यदि पूर्व मध्यकाल एवं उत्तर मध्यकाल की तुलना करें तो देखेंगे कि कुछ बातें पूर्व में यदि बहुत मिलती हैं तो उत्तर में वे कम हो गयी हैं तथा आधुनिक काल में नहीं मिलती या समाप्त–प्राय हैं। उदाहरण के लिए तेन–तेन्ह और तिन–तेन्ह ले सकते हैं। स्पष्ट है कि परवर्ती का विकास है, पूर्ववर्ती, मध्यकाल में अधिक प्रयुक्त हुआ है, तो उत्तर में कम और अब प्रायः बिल्कुल नहीं। भव 'भ' के बारे में भी यही बात है। 'भव' का ही विकास 'भा' में हुआ है। 'भव' पूर्व मध्यकाल के कम, उत्तर मध्यकाल में अपेक्षाकृत और तथा अब बहुत अधिक प्रयोग है। उसके प्रायः सभी या अधिकांश रूप आछहि (=है), आछह (=है) आदि मिलते हैं। किन्तु उत्तर–मध्य में इसका प्रयोग बहुत कम हो गया है। जायसी में 'आँखें', 'आछत', इन दो रूपों में यह क्रिया केवल चार बार आयी है। तुलसी में यह धातु केवल 'अछत' शब्द रूप में ही एक–दो बार प्रयुक्त है। अब इसका प्रयोग प्रायः समाप्त हो गया है। भोजपुरी में 'अछत' रूप में यह मात्र एक शब्द के रूप में बन गयी है। इस प्रकार के और भी अनेक शब्द हैं। 1700 के बाद की

ISSN No. 2347-2944,RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218, SOCLREG. No. 561/2013-14

अवधी हेमकर के कृष्णचरितामृत (18वीं सदी मध्य) शिवरामकृत भक्ति जयमाल (1730), शेख निषार की 'यूसुफ जुलेखा' (1779 ई0), कासिमशाह का हंस जवाहिर (1793 ई.), शंकर की बैताल पचीसी (1814), अलीशाह की प्रेम चिंगारी (1845) तथा ख्वाजा अहमद की नूरजहाँ (1905) आदि पचासों रचनाओं में सुरक्षित है।[9]

मध्यकालीन अवधी का दूसरा रूप संस्कृत से अधिक प्रभावित है। इसमें संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्द बहुतायत से मिलते हैं। संस्कृत के प्रभाव से यह रूप जनभाषा से कुछ अधिक दूर हो गया है। युग के उत्तरार्द्ध की रचनाओं पर ब्रजभाषा का भी प्रभाव दिखायी पड़ता है। अवधी का यह रूप रामभक्ति धारा और प्रेमाख्यानक काव्यधारा की रचनाओं में मिलता है। रामभक्ति धारा कवियों में सूरजदास (तुलसी पूर्व) तुलसीदास, अग्रदास, लालदास, रामचरणदास, महाराज रघुराज सिंह, जानकीचरण और धर्मदास प्रमुख हैं। इनमें गोस्वामी तुलसीदास की अवधी तो संस्कृत से इतनी प्रभावित है कि उसमें अवधी रूप नाममात्र के मिलते हैं।[10]

अवधी का आधुनिक काल 1850 ई. के बाद प्रारम्भ होता है। मध्यकालीन अवधी संस्कृत, फारसी से आक्रान्त होकर अपना जनभाषा का रूप खो चुकी थी जो दैनन्दिन व्यवहार की भाषा से दूर हो गयी थी। अतः 1850 तक आते–आते यह अपने स्थान से अपदस्थ कर दी गयी और पुनः[11] जनभाषा की प्रतिष्ठा हुई। अवधी के जनभाषा वाले रूप की पुनर्प्रतिष्ठा से ही उसके आधुनिक जीवन का स्वरूप प्रारम्भ होता है।

प्राचीन और मध्यकालीन अवधी को 'पूरबी' भी कहा गया है। इसका कारण यह है कि उन कालों में पूर्वी अवध–क्षेत्र की जनभाषा ही साहित्य का आधार बनी थी। आधुनिक काल में साहित्य की अवधी का आधार पश्चिमी क्षेत्र की जनभाषा बन गयी है। अतः अवधी बैसवाड़ी के अधिक निकट है। अवधी के आधुनिक कवियों में बलभद्रप्रसाद दीक्षित, 'पढ़ीस', वंशीधर शुक्ल, ब्रजनन्दन पाण्डेय, केदारनाथ द्विवेदी 'नवीन', लक्ष्मणप्रसाद मिश्र, द्वारिकाप्रसाद 'युगचन्द्र', चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका, दयाशंकर देहाती', गुरूप्रसाद सिंह 'मृगेश', त्रिलोचन शास्त्री, आचार्य विश्वनाथ पाठक, द्वारकाप्रसाद मिश्र, आद्याप्रसाद मिश्र 'उन्मत्त', विश्वनाथ सिंह, विकलगोण्डवी, रमाकान्त श्रीवास्तव, राजेश दयालु, राजेश, डॉ. श्याम तिवारी, देवकीनन्दन श्रीवास्तव और जुमई खाँ 'आजा' उल्लेखनीय हैं।[12]

इस प्रकार स्पष्ट है कि अवधी भाषा की महत्ता दो तथ्यों पर आधारित है। एक है उसकी प्राचीनता और दूसरा तथ्य है उसकी व्यापकता। उसका इतिहास लगभग 1000 वर्षों का है। यह भाषा अपभ्रंश–अवहट्ट के साथ विकसित हुई है। सबसे सुखद आश्चर्य इस बात का है कि अवधी गद्य और पद्य का विकास सामान्तर रूप से हुआ है जबकि विशेषताओं का गद्य बहुत परवर्ती है। अवधी का क्षेत्र राष्ट्रव्यापी बल्कि कुछ अंशों में विश्वव्यापी प्रतीत होता है। इसका केन्द्र तो रहा है अवध अंचल, लेकिन इसका व्यवहार छत्तीसगढ़, बघेलखण्ड, मध्य–प्रदेश, बिहार और उत्तर–प्रदेश के साथ गुजरात, महाराष्ट्र

तक होता रहा है। इसका कारण मुख्यतः यह रहा है कि इस अंचल से प्रवजित अनेक सैनिक पुर्तगाली अंग्रेजी सेनाओं में गये। व्यापारी रूप में भी अवधवासियों ने यात्राएँ की। जीविका के क्षेत्र में आज भी यहाँ की[13] जनता, कोलकाता, मुम्बई, सूरत, अहमदाबाद, हैदराबाद, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब आदि औद्योगिक क्षेत्रों की ओर बराबर आती जाती रहती है। अवध–क्षेत्र के गिरिमिटिया मजदूर सूरीनाम, गुयाना आदि देशों में बड़ी मात्रा में गये। इस तरह अवधी का क्षेत्र दूर–दूर तक फैल गया।[14]

सन्दर्भ–ग्रन्थ :

1. डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित, डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, अवधी काव्यधारा, अमित प्रकाशन, लखनऊ, पृ. 3।
2. वही, पृ. 3
3. वही, पृ. 4
4. वही, पृ. 5
5. वही, पृ. 5
6. वही, पृ. 6
7. वही, पृ. 6
8. आधुनिक अवधी काव्य, डॉ. महावीर प्रसाद उपाध्याय, डॉ. रामसनेहीलाल षर्मा, 'यायावर', पृ.2
9. वही, पृ. 3
10. वही, पृ. 4
11. वही, पृ. 4
12. वही, पृ. 5
13. अवधी काव्य धारा, पृ. 8
14. वही, पृ. 9